International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.in
ISSN: 2455-4588
Received: 17-02-2023, Accepted: 05-03-2023, Published: 20-03-2023
Volume 8, Issue 1, 2023, Page No. 46-48

विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सौन्दर्यात्मक आस्वादन के विकास में कला समेकित शिक्षा कि भूमिका

डॉ. आरती सिंह[1], रुपाली सिंह[2]
[1] निर्देशक, शिक्षा विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, यूनिवर्सिटी आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, यूनिवर्सिटी आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
विज्ञान एवं तकनीकी के इस युग में शिक्षण को एक ऐसी कला के रूप में स्वीकार किया गया है जिसमें शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को सफल एवं प्रभावी बनाने के लिए ऐसी विभिन्न प्रकार की विधियाँ एवं सामग्रियों का प्रयोग करता है जिससे विद्यार्थी का ध्यान विषय की ओर आकृष्ट हो सके। प्रत्येक बच्चे के विकास के लिए शिक्षा एवं कला का महत्व होता है। हमारें साहित्य में भी यह साबित हो चुका है की कला और शिक्षा कैसे एक विद्यार्थी जीवन को प्रभावित करती है। चाहे शोधकर्ता हो या शिक्षाशास्त्री या वैज्ञानिक सभी इस बात से सहमत हैं कि बच्चे के विकास को तेज करने के लिए और उसके मस्तिष्क को विभिन्न तरकीबों से उद्दीपित करने के लिए विभिन्न कलात्मक गतिविधियों का प्रयोग किया जा सकता है। विद्यमान शोध सुझाते है की कोई भी कला अनुभव मस्तिष्क और शरीर को पूर्ण रूप से कार्यशील बनाता है। वर्तमान में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है। शिक्षण में सृजनात्मक अभिवृति विद्यार्थियों की रचनात्मकता को पोषित करती है। आधुनिक शिक्षा में अध्यापक के समक्ष एक बड़ी चुनौती है की वह बदलते परिवेश में शिक्षण को किस प्रकार प्रभावी बना सके कि छात्रों की शिक्षा में रोचकता बनी रहें। कला ही एक ऐसा माध्यम है जो की विद्यार्थियों मे रुचि के साथ–साथ कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता, रचनात्मकता और सौंदर्यबोध आदि क्षमताओं की वृद्धि करता है। NCF (2005) कला, दृश्य एवं प्रदर्शन कला दोनों ही मुख्य रूप से प्रारम्भिक स्तर के पाठ्यक्रम और अधिगम के लिए महत्वपूर्ण उपागम है। इस स्तर पर बच्चों के कौशलों और योग्यता को विकसित किया जाता है। कला एकीकृत शिक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उपकरण है। अतः परिणाम स्वरूप कला समेकित शिक्षा को विद्यालयों मे एक माध्यम के रूप में प्रयोग किया गया जिसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य है कि किस प्रकार कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सौन्दर्यात्मक आस्वादन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मूल शब्दः सौन्दर्यात्मक आस्वादन, शिक्षण में सृजनात्मक, शिक्षाशास्त्री या वैज्ञानिक

प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम और विकास के लिए कला अनुभवों के महत्व को समझते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) कक्षा 10 तक कला को एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित किए जाने कि सिफ़ारिश करती है। सामान्यतः यह देखा जाता है की बच्चे उन कार्यो को करना चाहते है जिनमें उन्हें मजा आता हो, मजे के साथ किया गया कार्य सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। सामान्यतः विद्यालयों में जब बच्चे शिक्षक के निर्देशानुसार कार्य करते है, तो प्रतिदिन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नीरसता आने लगती है। भले ही वह करना चाहते हो या नहीं। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो समाज कि आवश्यकताओं के साथ परिवर्तित होती रहती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का केंद्र छात्र है जिसमें शिक्षण अधिगम हेतु संरचनावादी उपागम को उपयोगी माना जा रहा है। इस उपागम के अतर्गत विद्यार्थियों द्वारा स्वयं करके सीखने पर बल दिया जा रहा है। विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने की इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में होती है जो सीखने हेतु उचित परिस्तिथियों का निर्माण करता है। शिक्षण कि प्रक्रिया को प्रभावी बनाने तथा आधिकारिक उद्देश्यों कि प्राप्ति के लिए शिक्षक शिक्षण के समय ऐसी विभिन्न प्रकार कि सामग्रियों का प्रयोग करता है जिसमें विषय सामग्री को सरल एवं रुचिकर बनाकर प्रस्तुत किया जा सके। कला एकीकृत को शिक्षा का आधार बनाकर विद्यार्थियों को सक्रिय शिक्षार्थी बनाया जा सकता है और उनकी संज्ञानात्मक योग्यताओं को बेहतर किया जा सकता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम के हर क्षेत्र मे विषय वस्तु को समझने और उसके समावेशन मे कला सहायता करती है प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर कला के विभिन्न रूपों का समेकन अन्य विषयों से कर सकते है।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

जब विद्यार्थी किसी कार्य को स्वयं करता है तो वह अपने तरीके से रचनात्मकता का प्रयोग करता है। स्कूली शिक्षा बच्चों के प्रारम्भिक वर्षो के रचनात्मक विकास को परिभाषित करती है। व्यापक शोधों पर आधारित यह सर्वविदित तथ्य है की कलाओं के माध्यम से शिक्षा लीक से हटकर सोचने को प्रोत्साहित करती है। कला एक ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा अपने अंदर विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जा सकता है रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी कहा है कलात्मकता मनुष्य का नैसर्गिक गुण है। वह जन्म से ही कलाकार होता है वह बचपन से ही कला के सृजन की सतत प्रक्रिया में लगा रहता है। चाहें दीवार पर आड़ी तिरछी रेखाए खींच रहा हो या आस. पास के किसी व्यक्ति की नक़ल कर रहा हो या किसी डिब्बे को पीट–पीट कर आवाज निकालने की कोशिश कर रहा हो या मिट्टी का खिलौना बना रहा हो, इन सभी गतविधियों में उसे जो आनंद आता है उन्हें शब्दों में कहना कठिन है। इन सभी क्रियाकलापों में विद्यार्थी की रचनात्मकता दिखाई देती है। एक रचनात्मक विद्यार्थी अधिक अनुकूल है वह अपने विचारों को धारा प्रवाह व्यक्त करता है और सोचने सीखने में लचीलापन दिखाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर जोर देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ. साथ तार्किक और समस्या समाधान एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए

सौंदर्यात्मक आस्वादन

आस्वादन का संबंध सिर्फ आहार से ही नहीं है। आहार, पोशाक, संगीत आदि के चुनाव या पसंद के लिए भी इस शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। यदि हम विद्यार्थियों को सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विविधता के प्रति संवेदनशील बनाना चाहते है तो विभिन्न खेलों और गतिविधियों की रचना कर सकते है यह बहुत उपयोगी रहेगा। आस्वादन विस्तृत सांस्कृतिक अर्थो के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सबसे पहली और स्थूल बात यह है की कला के द्वारा हमारे जीवन में सौन्दर्य का निर्माण होता है अर्थात हमारे प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग होने वाली चीजे सुन्दर आकर्षक हो यह कला का ध्येय होता है।

कला समेकित शिक्षा

विभिन्न्न विषयो के पाठ्यक्रम की विषय वस्तु को सीखनें–सीखाने के लिए कला को शिक्षा के साथ जोड़ देना ही कला समेकित शिक्षा है। कला समेकित शिक्षा को विभिन्न्न विषयो से जोड़कर उनकी विषय–वस्तु को प्रभावी ढंग से सिखाया जाता है कला के माध्यम से विभिन्न्न विषयो की अमूर्त अवधारणाओं को बहुत ही सरल और आसान तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। कला समेकित शिक्षा को विभिन्न विषयो के पाठ्यक्रम की विषय वस्तु को तार्किक तथा विद्यार्थी केन्द्रित और अर्थपूर्ण तरीके से जोड़ने के साथ एकीकरण करके शिक्षण को रोचक और मजेदार बनाना है। संपूर्ण इकाई बनाने के लिए भिन्न भागो को मिश्रित करने या जोड़ने का कार्य एकीकरण या समेकन कहलाता है। कला का इसमें प्रयोग करके उसे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में कला के साथ एकीकरण करना कला समेकित है। कला समेकित शिक्षा को पाठ्यक्रम का मुख्य हिस्सा बनाते हुए काम करते है। कला समेकित शिक्षा से सीखने–सिखाने कि प्रक्रिया को सरल व प्रभावी बनाया जा सकता है। कला समेकित शिक्षा एक शिक्षण अधिगम मॉडल है जो कला के द्वारा सीखाने एवं कला के साथ सीखनें पर आधारित है। (करेन हैजेक 2011) ने भी अपने शोध अध्ययन में बताया की विद्यार्थी कि विज्ञान विषय मे रुचि तब ही हो सकती है जब वे विषय वस्तु के साथ–साथ चित्र भी बनाता जाता है, अर्थात विद्यार्थियों की रुचि को बनाए रखने के लिए शिक्षण के साथ कला का समेकन आवश्यक है। कला समेकित शिक्षा के लिए शिक्षक को कला विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं है। परंतु यह आवशयक है की उन्हें कला विधाओं कि थोड़ी समझ होनी चाहिए। कला का सीधा सम्बन्ध हमारी ज्ञानेंद्रियों से होता है यह मनुष्य के विचारों एवम् भावों को प्रकट करने की भाषा है NCF (2005) के अनुसार शिक्षक शिक्षा और देश के शिक्षकों की क्षमता के विकास की प्रक्रिया को पूर्ण रूप से बदलने की आवश्यकता है क्योकिं शिक्षक ही वह मुख्य व्यक्ति होता है जो पाठ्यक्रम को कक्षा में बच्चों तक पहुंचाता है।

विभिन्न समितियों द्वारा अलग–अलग समय में कला शिक्षा की उपयोगिता बतायी गयी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही विभिन्न शिक्षा समितियों द्वारा कला को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान दिए जाने सम्बन्धी अनुसंशायें होती रही है–

माध्यमिक शिक्षा समिति (1952–53) की रिपोर्ट के अन्तर्गत विद्यार्थियों में सृजनात्मक ऊर्जा के विकास एवम् सांस्कृतिक विरासत के सम्मान एवं ज्ञान पर अधिक जोर दिया गया था। इस ज्ञान द्वारा वे आगामी जीवन में उसका उपयोग कर जीवन यापन करने में सक्षम हो सकते है। माध्यमिक विद्यालयों में कला क्राफ्ट संगीत नृत्य आदि विधाओं को विषय के रूप में इन्हें पाठ्चचर्या में शामिल किया गया था। इसके पीछे विचारकों का उद्देश्य था कि विद्यार्थी हाथ से कार्य करके कोई एक क्राफ्ट में दक्षता हासिल करे। इस प्रकार अपने रचनात्मक कार्यो के दरम्यान विद्यार्थी प्रसन्नता प्राप्त करते हुए व्यक्तित्व का विकास कर सकें।

भारतीय शिक्षा नीति (1964–66) इस नीति के अन्तर्गत कोठारी कमीशन की रिपोर्ट के द्वारा दृश्य कला एवं प्रदर्शन कलाओं के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने की सिफारिश की गयी द्य कला शिक्षण को श्रेय न दिए जाने से होने वाली क्षति के कारण नैतिक मूल्यों के हनन और सौन्दर्य बोध में होने वाले ह्रास को भी इस कमीशन ने इंगित किय द्य इसके अतिरिक्त विद्यालय स्तर पर भी कला विभाग एवं क्षेत्र में शोध कार्य को बढ़ावा देना प्रस्तावित किया गया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छब्म्त्ज ने पाठ्यचर्या परिचर्चा में 1975 में कोठारी कमीशन की अनुसंशा के अनुरूप कला शिक्षा को सृजनात्मक गतिविधियों 1980 में सृजनात्मक अभिव्यक्तियों, 1988 में कला एवं सृजनात्मकता के नाम से प्रस्तावित किया गया था। इन सभी में विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, उत्सुकता, खोज, सृजन एवं सौन्दर्यबोध को विकसित करना ही मुख्य उद्देश्य था।

विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सौंदर्यात्मक आस्वादन के विकास में कला समेकित शिक्षा की भूमिका

- कला समेकित शिक्षा को शिक्षा का आधार बनाने से बच्चों की मानसिक एव्यवहारिक, भावनात्मक संवेगों के साथ–साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सौंदर्यात्मक आस्वादन का विकास होता है।
- कला समेकित शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी निर्माण और प्रस्तुति के बारे में सीखता है बहुत सी रचनात्मक क्रियाओं में जिनमें सामग्री का प्रयोग करना सीखाया जाता है उनमें आकार आकृति और रंगो का ज्ञान सम्मिलित होता है। इन सभी रचनात्मक क्रियाओं से विद्यार्थियों में सावधानी पूर्वक कार्य करने की प्रवृत्ति और रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होता है।
- यदि हमें नई पीढ़ी में रचनात्मक अभिव्यक्तियों का विकास करना है तो शिक्षा की प्रक्रियाओं को नवीनीकरण साधन के रूप में सभी उच्च तकनीकी संस्थान शोध कार्यो में पूरी तत्परता से जुटना होगा।
- कला समेकित शिक्षा अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए लाभप्रद है। इससे अध्यापको की कक्षा बालकेन्द्रित एवं आनंददायी बन जाएगी तथा विद्याथियों के लिए रुचिकर।
- कला समेकित शिक्षा में कला को पाठ्यक्रम का मुख्य हिस्सा बनाते हुए काम किया जाता है इससे विद्यार्थियों में कई तरह के कौशल और क्षमताओं का विकास होगा। सिंह,सुरिंदर (2020) रोल औफ़ आर्ट इंटेग्रटेड लर्निंग इन अन्हेंसिंग अचीवमेंट एंड इंटरेस्ट इन मैथमेटिक एंड साइंस इंपेक्ट स्टडी। इन्होनें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर बताया की कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों के गणित और विज्ञान के अंको में वृद्धि करता है और उनकी रचनात्मक कौशल एवं तर्क कौशल को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
- कला अभिव्यक्ति के लिए भाषा प्रदान करती है । यह अभिवयक्ति कला के दृश्य रूप जैसे–पेंटिंग फोटिग्राफी, मूर्तिकला (प्रदर्शन रूप) नृत्य, संगीत, रंगमंच के प्रदर्शन में हो सकती है। आप बच्चों कि किसी टोली को कमरे में खेलते हुए कम से कम एक घंटा अवलोकन करे। आप देखेगें की बच्चे आपस में नई नई रचनात्मक क्रियाएँ कर रहे है, वे अपने सामाजिक संपर्क बना चुके होंगें।
- बच्चों के लिए अभिव्यक्ति के वाहन के रूप में कला समेकित शिक्षा का उपयोग बहुत ही समृद्ध है। क्योकिं कलात्मक गतिविधियों के माध्यम से वे अपने विचारों, भावनाओं और रुचियों को प्रकट कर सकते है।

- कला समेकित शिक्षा को बढ़ावा देने का अर्थ है की बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों को प्रसारित कर सकते है।
- रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए ड्राइंग को बढ़ावा देना उचित है। ड्राइंग के साथ बच्चा अपनी कल्पना को भी विकसित करता है। विद्यार्थीयों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के विकास में कला समेकित शिक्षा की मुख्य भूमिका होती है। कला न सिर्फ उनकी संवेदनाओं को उत्तेजित करती है बल्कि अन्य विषयों के ज्ञान को प्राप्त करने तथा उन्हें समझने का दृष्टिकोण भी सुझाती है। भाषा शिक्षण के मुख्य उद्देश्यों में भाषाई कुशलता–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना के साथ–साथ कल्पनाशीलता को भी बढ़ाती है।
- शिक्षण संस्थाओं में नवाचार की अवधारणा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध से संबन्धित भावनाओं का विकास करना है। शिक्षा में यदि सौंदर्य आ जाता है तो विद्यार्थियों का दृष्टिकोण ही बदल जाता है। कला समेकित शिक्षा स्वयं एक रचना प्रक्रिया है अर्थात हम इसे तकनीक कह सकते है। कला समेकित शिक्षा का सौंदर्य से गहरा तालमेल है एक के बिना दूसरे की कल्पना नही की जा सकती है।
- कला समेकित शिक्षा को सौन्दर्यात्मक तत्व से पृथक नहीं किया जा सकता। जब तक शिक्षक में सौंदर्य तत्व नहीं होगा वह अपने विद्यार्थी को सौंदर्य का आस्वादन कैसे करा सकता है।
- कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण उपयुक्त माध्यम के रूप में पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बन गई है। प्रत्येक विद्यार्थी अनेकों छुपी हुई सृजनात्मक योग्यताओं से परिपूर्ण होता है विभिन्न कलाएं ही विद्यार्थी की उत्सुकता, कल्पना, सृजन और सौन्दर्यानुभूति को विकसित करती है। कला समेकित शिक्षा द्वारा किया गया शिक्षण में शरीर एवं मस्तिष्क दोनों की सक्रिय भागीदारी होती है।विद्यार्थी आक्रोश एवं उदंडता से दूर होकर सृजनशील और ज्ञानवान व्यक्तित्व का धनी हो जाता है।

निष्कर्ष

अंत में सम्पूर्ण शोध–पत्र के अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि कला समेकित शिक्षा द्वारा कला को शिक्षा का माध्यम बनाया जाता है जिससे कला के द्वारा व्यक्ति के मानसिक, व्यवहारिक, भावनात्मक संवेगों की सौन्दर्यपूर्ण प्रस्तुति होती है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में अद्वितीय होता है उसमें गुप्त रचनात्मक योग्यताएं एवम् सौन्दर्य के प्रति आकर्षण भी उपलब्ध होता है। कला समेकित शिक्षा एक ऐसा ही माध्यम है जिसके द्वारा विभिन्न रचनात्मक योग्यताओं को पोषित किया जा सकता है। दृश्यात्मक एवम् प्रदर्शनकारी कलाओं द्वारा नई–नई रचनात्मक अभिवृत्तियों का विकास कर विद्यार्थियों में सौन्दर्यात्मक क्षमता का विकास होता है। कला समेकित शिक्षा द्वारा सीखना, सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने में मदद करता है। कला समेकित शिक्षा के द्वारा कला को मुख्य बिंदु के रूप में रखकर विभिन्न विषयों की अमूर्त अवधारणाओं के बीच एक सम्बन्ध स्थापित करता है। कला समेकित शिक्षा का उपयोग करके सीखना आनंददायक बन जाता है। सीखने का यह तरीका ज्ञान और समझ को बढ़ाने में मदद करता है। कला समेकित शिक्षा से आज के नवीन पीढ़ी के बच्चों को रचनात्मक, सृजनात्मक एवं रुचिकर तथा नवीन कार्यो को करने में सक्षम बनाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986
3. शिक्षा नीति 1964 दृ 66
4. गुड, बार स्केट्स (1966), मैथडलाजी आफ रिसर्च, साइकोलाजी एण्ड सोशलाजी, सेन्चुरी कफट्स इडक, न्यूयॉर्क।
5. गुप्ता प्रेफेसर एस.पी. और गुप्ता डा. अलका, 2008; सांख्यिकीय विधियांः शारदा पुस्तक भवन इलहाबाद, उ0 प्र0
6. https%@@www-edutopia-org@stw arts integration reform overview
7. NCERT Training pacakage on art education for primary teachers ¼2018½ National Council of Educational Research and Training ISBN&978&93&5292&107
8. ·International educational scientific research journal E&ISSN%2455&295X vol%3 issue%6JUN2017
9. मशीन, राविमा, नैमा मुबारक (2017) ए स्टडी ऑन स्टडी हैबिट्स एण्ड ऐकेडमिक परफोरमेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एशियन सोशल साइन्स टवस. 7] No 10] 891&897 Retrieved from DOI 10-18488@Journal@-2017-710-891-897
10. पोजीशन पेपर ऑन आट्र्स ए म्यूजि कएडांस एंड थि एटरए एनसीईआरटी 2006
11. रिपोर्ट ऑन नेशनल सेमि नार ऑन आर्ट इंट्रीगेटेड लर्नि गए डीईएएए एनसीईआरटी 2012
12. प्रसादए देवीए आर्ट द बेसि स ऑफ एडुकेशनए नेशनल बुक ट्रस्टए 1998
13. ट्रेनिग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेशन फॉर प्राइमरी टीचर वॉल्यूम 1 और 2 एनसीईआरटी2015
14. कला समेकित शिक्षा भाग 1 प्रथम सत्र एराज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद एपटना बिहार